ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 157-159**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-II, Issues-36, YEAR-April-June. 2025

भारतीय ज्ञान परंपरा में वृद्धजनों की स्थिति और वर्तमान संदर्भ

अनिल कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर– समाजशास्त्र विभाग, श्री मुरली मनोहर टाउन स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बलिया (उ0प्र0) भारत

Received-08.05.2025, Revised-16.05.2025, Accepted-22.05.2025 **E-mail : aniljiararia@gmail.com**

सारांशः ***वृद्धावस्था जीवन के विकास क्रम की एक अनिवार्य एवं अंतिम अवस्था है। यह मानव जीवन की संध्या बेला है, जिसके बाद जीवन का अवसान हो जाता है। वृद्धावस्था जहां एक ओर प्राणियों के लिए एक जैविकीय यथार्थ है, वहीं दूसरी ओर यह मानव प्राणियों के लिए एक सामाजिक यथार्थ भी है। परंपरागत भारतीय समाज व्यवस्था में वृद्धजनों को उच्च सामाजिक प्रस्थिति एवं सम्मान प्राप्त था। भारतीय ज्ञान परंपरा में उन्हें देवता तुल्य मानकर उनकी स्तुति की गई है जबकि वर्तमान आधुनिक समाज में उनके प्रति सम्मान और श्रद्धा का अभाव देखा जा रहा है। भारतीय ज्ञान परंपरा में वृद्ध माता–पिता की सेवा करना सदकर्म और व्यक्ति का परम नैतिक कर्तव्य माना गया। परंतु आधुनिकता की अंधी दौड़ में वर्तमान समाज इन तथ्यों को भूलता जा रहा है। संयुक्त परिवार का विघटन, औद्योगिक अर्थव्यवस्था, नगरीकरण और पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव में वृद्धजन अपने ही समाज और परिवार में उपेक्षित होते जा रहे हैं। वृद्धजनों का संरक्षण, सम्मान और समाज व्यवस्था में समायोजन वर्तमान दौर में एक सामाजिक और राष्ट्रीय प्रश्न बन गया है। सरकारें वर्षों से इस दिशा में प्रयासरत हैं, परंतु समस्या है कि बढ़ती ही जा रही है। नीतिगत प्रयासों के साथ ही नैतिक प्रयासों की जरूरत है, तभी इस समस्या का वास्तविक समाधान निकल पाएगा।***

कुंजीभूत शब्द– वृद्धावस्था, भारतीय ज्ञान परंपरा, संयुक्त परिवार, सामाजिक यथार्थ, नीतिगत प्रयास, नैतिक प्रयास, सद्कर्म

वृद्धावस्था जीवन की एक अनिवार्य एवं अंतिम अवस्था। यह जितना जैविक है, उससे कहीं ज्यादा सामाजिक एवं सांस्कृतिक है। यही कारण है कि प्रत्येक समाज अपने मूल्यों एवं मानकों द्वारा वृद्धावस्था को नियोजित एवं प्रशासित करने की एक व्यवस्था जरूर विकसित करता रहा है। परंपरागत रूप से भारतीय समाज में वृद्धावस्था को उच्च प्रस्थिति एवं सम्मान प्राप्त था। यह श्रद्धायुक्त अवस्था थी, जिसे सामाजिक संरचना द्वारा संरक्षित किया गया था, परंतु परिवर्तन की विभिन्न प्रक्रियाओं के प्रभावस्वरूप सामाजिक संरचना में आए बदलाव ने वृद्धावस्था को संकटग्रस्त बना दिया है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली (आईकेएस) में, बुजुर्ग लोगों को उच्च सम्मान प्राप्त था और उन्हें ज्ञान, अनुभव और परंपरा के महत्वपूर्ण भंडार के रूप में देखा जाता था, उनकी भूमिका सांस्कृतिक, सामाजिक, दार्शनिक और यहां तक कि आध्यात्मिक क्षेत्रों में फैली हुई है।

पारंपरिक भारतीय समाज में, ज्ञान को अक्सर एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक मौखिक रूप से हस्तानान्तरित किया जाता था। बुजुर्गों ने लोक कथाओं, महाकाव्यों (जैसे रामायण और महाभारत), नीतिवचन, अनुष्ठानों और रीति–रिवाजों को प्रसारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गुरु (शिक्षक), अक्सर बुजुर्ग, वैदिक, आयुर्वेदिक, ज्योतिषीय और आध्यात्मिक ज्ञान के सम्मानित स्रोत थे।

ऋग्वेद में सौ शरद जीवन की स्तुति है। "पश्येम शरदरू शतं" इस श्लोक में 100 वर्ष देखने की इच्छा व्यक्त की गई है। बुढ़ापे के कष्टों के प्रति वैदिक समाज की संवेदना गहरी है। उनके अनुसार वृद्ध हमारे समाज का अनुभव समृद्ध भाग है। उनके जीवन को कष्टरहित बनाना समाज का कर्तव्य है। वृद्धों की सेवा उनके पुत्रों एवं पौत्रों का प्रथम वरीयता वाला दायित्व है। यह राष्ट्र–राज्य का भी कर्तव्य है। शारंगधर संहिता (आयुर्वेद) में कहा गया है कि प्रत्येक 10 वर्ष बाद भाव ह्रास के लाक्षणिक परिवर्तन आते हैं। ऋग्वेद के एक मंत्र में सभी वरिष्ठजनों को नमस्कार किया गया है– "इदं नमः ऋषिभयरू पूर्वजेभयरू वैभयरू पथिकृदम्यः"। जो नहीं है और जो है, उन सबको नमस्कार किया गया है।

महाभारत में कहा गया है कि वह सभा सभा नहीं है, जिसमें वृद्ध नहीं है। इसी ग्रंथ में यह भी कहा गया है कि वे वृद्ध वास्तविक वृद्ध नहीं हैं जो धर्मतत्व नहीं जानते। रामकथा वृद्धों के प्रति श्रद्धा, सम्मान और समर्पण से युक्त है। इसी काल में प्रचलित श्रवण कुमार की कहानी ने माता–पिता के प्रति संतान के कर्तव्यों के संबंध में सर्वोच्च नैतिक आदर्श को स्थापित करने का काम किया।

ऋग्वेद में माता को पृथ्वी और पिता को आकाश के समान माना गया है। ऋषि कहते है कि हम पृथ्वी को माँ जैसी और पिता को आकाश जैसी प्रतिष्ठा दें। वैदिक संस्कृति में माता–पिता को देवता के समान माना गया है। किसी भी देश की संस्कृति और सभ्यता में ऐसा दिखाई नहीं पड़ता है।

ऋग्वेद में ऋषियों ने इन्द्र से कामना की है कि जिस प्रकार पिता अपने पुत्र को संरक्षण देते हैं, वैसा ही संरक्षण आप मुझे प्रदान करें। सोम से स्तुति किया गया है कि हमें वैसे ही सुखी रखो, जैसे पिता अपने पुत्र को सुखी रखता है।

मनुस्मृति और धर्मशास्त्र जैसे ग्रंथों में, बुजुर्गों को धर्म (धार्मिकता/कानून) के संरक्षक के रूप में चित्रित किया गया है, वे नैतिक निर्णय लेने और नैतिक मूल्यों को बनाए रखने में युवा पीढ़ियों का मार्गदर्शन करते हैं।

भारत में संयुक्त परिवार प्रणाली पारंपरिक रूप से घर के मुखिया के रूप में सबसे वरिष्ठ पुरुष सदस्य के इर्द–गिर्द घूमती है। बुजुर्ग वित्त, विवाह और संपत्ति के बारे में महत्वपूर्ण निर्णय लिया करते थे, और सभी महत्वपूर्ण मामलों पर उनसे परामर्श किया जाता था। संयुक्त परिवार प्रणाली के अंतर्गत वृद्धजनों को सामाजिक, आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक समस्त प्रकार की सुरक्षा प्राप्त थी। ग्रामीण एवं कृषक अर्थव्यवस्था ने उन्हें ज्ञान के प्रमुख श्रोत के रूप में स्थापित किया था। आश्रम व्यवस्था में अंतिम दो चरण वानप्रस्थ एवं सन्यास वृद्धावस्था से जुड़े हैं।

परंतु, परिवर्तन की विभिन्न प्रक्रियाओं, यथा– पश्चिमीकरण, औद्योगीकरण, नगरीकरण, आधुनिकीकरण एवं वैश्वीकरण के प्रभावों के फलस्वरूप भारतीय समाज व्यवस्था में व्यापक संरचनात्मक परिवर्तन आए। परंपरागत मानक, मूल्य एवं संस्थाएं निष्प्रभावी होने लगी। इसका असर समाज के अन्य तबकों के साथ–साथ वृद्धजनों पर भी पड़ा। संयुक्त परिवार के विघटन के फलस्वरूप वृद्धजन सामाजिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक रूप से असुरक्षित होते चले गए। मूल्य–व्यवस्था में बदलाव और आधुनिक जीवन–शैली के

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-II, Issues-36, YEAR-April-June. 2025

कारण पीढ़ीगत संघर्ष बढ़ने लगे और वृद्धजन उपेक्षित होते जा रहे हैं। पीढ़ीगत संघर्ष के कारण वृद्धजनों के सामाजिक समायोजन की समस्या उत्पन्न हो रही है। परिवार में केन्द्रीय और सम्मानित स्थिति रखने वाले बुजुर्ग आज अपने ही परिवार में बेगाने हो गए हैं। समस्त परिवार का बोझ उठाने वाले आज स्वयं परिवार में बोझ माने जाने लगे हैं।

व्यक्तिवादी मूल्यों के कारण आज नई पीढ़ी बुजुर्ग माता–पिता की सेवा करना अपनी नैतिक जिम्मेदारी नहीं मानता , बल्कि उन्हें स्वयं के विकास में रुकावट या बाधा के रूप में देखता है। पितृभक्त श्रवण कुमार अब उनके आदर्श नहीं रह गए। नई पीढ़ी आत्म–केंद्रित जीवन जीने लगी है, जिसमें बुजुर्गों के लिए कोई स्थान शेष नहीं रह गया है।

विगत दो–तीन दशकों में वृद्ध जनसंख्या के आकार और अनुपात जो वृद्धि देखी गई है उससे परिस्थितियाँ और भयावह स्वरूप ग्रहण करती जा रही है। आने वाले दिनों में चुनौतियाँ और बढ़ने वाली हैं। दुनिया के साथ–साथ भारत में दो–तीन दशकों के दौरान एक गहरा जनसांख्यिकीय बदलाव देखा जा रहा है। भारत में बुजुर्ग लोग दृ आमतौर पर 60 वर्ष और उससे अधिक आयु के लोगों के रूप में परिभाषित होते हैं– बढ़ती जीवन प्रत्याशा और प्रजनन दर में गिरावट के कारण जनसंख्या के बढ़ते हिस्से का प्रतिनिधित्व करते हैं।

2022 तक कुल आबादी में बुजुर्ग आबादी का अनुपात लगभग 10प्रतिशत हो गया है और आने वाले दशकों में यह आंकड़ा काफी बढ़ने की उम्मीद है।

2050 तक बुजुर्गों की आबादी 300 मिलियन से अधिक तक पहुंचने का अनुमान है। यह जनसांख्यिकीय परिवर्तन सामाजिक ताने–बाने, पीढ़ीगत संबंधों और सार्वजनिक नीति को नया आकार दे रहा है। 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत में 104 मिलियन वृद्ध लोग (60+ वर्ष) हैं, जो कुल जनसंख्या का 8.6प्रतिशत है। बुजुर्गों (60+) में, महिलाओं की संख्या पुरुषों से अधिक है। 60 वर्ष से अधिक आयु की आबादी का हिस्सा 2022 में 10.5 प्रतिशत से बढ़कर 2050 में 20.8 प्रतिशत होने का अनुमान है। सदी के अंत तक, बुजुर्ग देश की कुल आबादी का 36 प्रतिशत से अधिक हिस्सा होंगे। जिस प्रकार कुल आबादी में बुजुर्ग आबादी का अनुपात बढ़ रहा है और इसके सापेक्ष सामाजिक, आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक सुरक्षा कम होती जा रही है, यह परिस्थिति बुजुर्गों के समाज के साथ समायोजन की चुनौतियों को और बढ़ा देती है।

संयुक्त परिवार एकल परिवारों में रूपांतरित हो रहे हैं, जिससे बुजुर्गों का सामाजिक अलगाव हो रहा है। इसके साथ ही प्रवास की घटना ने बुजुर्गों के देखभाल की समस्या को और जटिल बना देता है। कुछ को भावनात्मक या आर्थिक रूप से उपेक्षा या दुर्व्यवहार का सामना करना पड़ता है। तेजी से बदलती तकनीक (ऑनलाइन बैंकिंग, डिजिटल भुगतान, आदि) को अपनाने में कठिनाई के कारण उनका जीवन और कठिन हो जाता है । बुनियादी जरूरतों के लिए बच्चों पर निर्भरता असुविधा या उपेक्षा का कारण बन जाती है। परिवार के सदस्यों द्वारा भावनात्मक, वित्तीय और यहां तक कि शारीरिक शोषण के मामले आम हो चले हैं। समाज में वृद्धजन आज भावनात्मक, वित्तीय, सामाजिक और स्वास्थ्य चुनौतियों के जटिल मिश्रण का सामना कर, वृद्धावस्था से संबंधित चुनौतियों को कम करने का नीतिगत प्रयास भारत में 90 के दशक से किए जा रहे हैं।

भारत सरकार द्वारा वृद्धावस्था को नियोजित एवं प्रशासित करने हेतु अब तक निम्नलिखित प्रयास किए गए हैं :

1. वृद्ध व्यक्तियों पर राष्ट्रीय नीति (एनपीओपी), 1999
2. माता–पिता और वरिष्ठ नागरिकों का भरण–पोषण और कल्याण अधिनियम, 2007
3. वरिष्ठ नागरिकों के कल्याण के लिए राष्ट्रीय कार्य योजना, 2020
4. वरिष्ठ नागरिकों के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार–वयोश्रेष्ठ सम्मान
5. राष्ट्रीय वयोश्री योजना (आरवीवाई): वरिष्ठ नागरिकों के लिए शारीरिक सहायता और सहायक–जीवित उपकरण प्रदान करने की योजना
6. वरिष्ठ नागरिक कल्याण निधि– 2016
7. राष्ट्रीय वरिष्ठ नागरिक परिषद (एनसीएसआरसी)– 2012
8. आयुष्मान भारत के तहत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (पीएम–जेएवाई)– 2018
9. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन योजना (आईजीएनओएपीएस)– 2007
10. प्रधानमंत्री वय वंदना योजना (पीएनवीवीवाई)– 2017
11. अंत्योदय योजना, आदि

निष्कर्ष एवं सुझाव–इतने प्रयासों के बावजूद वृद्धजनों की समस्याओं में उल्लेखनीय कमी दिखाई नहीं पड़ती है। समाज एवं परिवार में बुजुर्गों की अवहेलना, दुर्व्यवहार, उपेक्षा आदि आज भी चिंता का विषय है। वृद्धाश्रमों की बढ़ती संख्या बताती है कि हमारी परंपरागत व्यवस्था बुजुर्गों को संभालने में विफल रही है। आधुनिक व्यवस्था इन्हें संभाल पाने में अक्षम है। आज वृद्धावस्था को लेकर समाज के समक्ष जो चुनौतियाँ दिखाई पड़ती है उसका समाधान भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित है। आज नीतिगत प्रयासों के साथ–साथ नैतिक प्रयासों की जरूरत है। भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित सूत्रों को अपना कर ही हम वृद्धावस्था को सुरक्षित एवं सम्मानित बना सकते हैं।

आज बुजुर्गों की गरिमा के साथ देखभाल करने के लिए समर्थन प्रणालियों को विकसित करने की आवश्यकता है। इसके लिए निम्नलिखित प्रयास अपेक्षित हैः

1. पारिवारिक बंधनों को मजबूत करना
2. बेहतर स्वास्थ्य देखभाल पहुंच
3. डिजिटल डिवाइड को पाटना
4. व्यक्ति में आध्यात्मिक एवं नैतिक गुणों का विकास करना।

बुजुर्ग बोझ नहीं बल्कि आशीर्वाद हैं। एक समाज जो अपने बुजुर्गों की देखभाल करता है, अपनी जड़ों का सम्मान करता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. India Ageing Report – 2023, International Institute for Population Sciences and United Nations Population Fund, New Delhi.
2. Sharma, M.L. & T.M. Dak, 1987. Aging in India. Delhi

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-II, Issues-36, YEAR-April-June. 2025

3. Elder Abuse in India – 2018, HelpAge India Report.
4. Elderly in India – 2021, Government of India, Ministry of Statics and Programme Implementation, National Statistics Office, New Dehi.
5. S. Irudaya Rajan and Gayathri Balagopal, 2021, Elderly Care In India; Societal and State Responses, Rawat Publication, New Delhi.
6. Dr. Shakuntala C. Shettar, 2013, Problems of Aged in Changing Indian Scenario, Yojana Magezine, Publication Division, New Delhi.
7. कुरुक्षेत्र, अंक:9, जुलाई 2020,
8. बुजुर्ग लोगों के अधिकार, राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग, नई दिल्ली ।
9. अटल, योगेश (2016), भारतीय समाज नैरंतर्या एवं परिवर्तन, नई दिल्ली ।
10. दीक्षित, हृदयनारायण, ऋग्वेद – वैदिक परिचय ग्रंथमाला – 1, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली ।
11. योजना – जुलाई- 2017, अंक- 07, प्रकाशन विभाग , नई दिल्ली ।.

*****